शिवशक्ति सरस्वती माँ

45. मम्मा में एक यह भी विशेषता थी कि वे कभी किसी को समय देकर नहीं मिलती थीं। जो बच्चे जब भी चाहें, किसी भी हालत में चाहें उनसे मिल सकते थे। मम्मा का वो व्यवहार अथवा पार्ट कहें असाधारण था। हमने देखा कि अन्य सब बहुत हंसते थे, बहलते थे, रमणीकता में आते थे लेकिन मम्मा कभी नहीं। मम्मा भी हंसती थीं परन्तु किसी को पता ही नहीं पड़ता था। शब्द रहित हंसी होती थी। वह मधुर मुस्कान होती थी। ज्ञान-ध्यान-योग के सिवाय और किसी में आसक्ति नहीं होती थी। अन्य लोग बाबा के साथ खेलना, रास करना आदि करते थे लेकिन मम्मा नहीं। इसका अर्थ यह नहीं कि मम्मा हर बात से किनारा करके अलग रहती थीं, नहीं। मम्मा सब कार्यक्रम जैसे पिकनिक, घूमना, फिरना, खेल-पाल आदि में जाती थीं परन्तु अपने पुरुषार्थ में मगन रहती थीं। ये सब क्रिया-कलाप साक्षी होकर देखती थीं। इस प्रकार मम्मा का स्व-पुरुषार्थ बहुत तीव्र था। मम्मा ने कभी अपना पुरुषार्थ ढीला नहीं छोड़ा।

46. मम्मा के देखने का ढंग ही विचित्र था। जैसे बाबा हमें देखते हैं और उनको देखते ही हम सब कुछ भूल कर एक अतीन्द्रिय अनुभव में चले जाते हैं, उसी प्रकार, मम्मा की दृष्टि, मम्मा का चेहरा इतना रूहानी होता था कि सामने वाला अपने को इस दुनिया से निराला अनुभव करता था। मम्मा हों अथवा बाबा हों, दोनों में कोई भी हमें योग कराते थे तो हम यहाँ नहीं रहते थे, कहीं दूर चले जाते थे, अनुभवों में खो जाते थे। उस समय हमें प्रैक्टिकल अनुभव होता था कि हम परमधाम में हैं। चार-पाँच घंटे तक भी हम सब और मम्मा-बाबा एक ही मुद्रा में बैठे योगस्थ रहते थे। शरीर बिल्कुल टस से मस नहीं होता था।